34

मुख्य शब्द और वाक्यांश

मसीह की सिद्धता पर हम उन शब्दों और वाक्यांशों के द्वारा आसानी से विचार कर सकते हैं, जिनमें मसीह की कहानी बताई गई है।

परमेश्वरत्व: ''परमेश्वर'' शब्द को ईश्वरीय परिवार के नाम के रूप में विचारा जा सकता है। परमेश्वरत्व या त्रिएकता, परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु) और परमेश्वर आत्मा है। परमेश्वर अस्तित्व और उद्देश्य में एक परन्तु व्यक्तित्व और काम में तीन हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 13:14)। उदाहरण के लिए यीशु के बपतिस्मे के समय, यीशु को बपतिस्मा दिया गया था, परमेश्वर पिता ने स्वर्ग से बात की थी और पवित्र आत्मा कबूतर की तरह उसके ऊपर उतरा था (मत्ती 3:16, 17)। KJV में देखें प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9.

पवित्र शास्त्र: बाइबल में छियासठ (पुराने नियम में उनतालीस और नये नियम में सत्ताइस) पुस्तकें हैं, जो पवित्र आत्मा की अगुआई और निगरानी में दी गई थीं। उनमें दिखाया गया है कि उनके साथ जो परमेश्वर की संतान बनने के इच्छुक हैं, उसने क्या किया है, क्या कर रहा है और क्या करेगा। पुराना नियम मुख्यतया ईश्वरीय इतिहास है, जबकि नया नियम मसीही युग के लिए यीशु की अन्तिम वसीयत और वाचा है। देखें 2 तीमुथियुस 3:16, 17; 2 पतरस 1:20, 21.

देह धारण करना: परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य यीशु वास्तव में मनुष्य बना और हमारे बीच में रहा। वह मसीहा है, जिसे भेजने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। उसने स्वर्ग छोड़ा और परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनी पहचान खोए बिना मनुष्य बना। केवल परमेश्वर-मनुष्य ही जगत के अपराध का बोझ उठा सकता था। देखें यूहन्ना 1:14; फिलिप्पियों 2:5-8.

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला: परमेश्वर ने मसीहा के आने का संदेश देने के लिए इस पुरुष को अलग किया। यूहन्ना के प्रचार के द्वारा परमेश्वर ने यीशु के आने के लिए लोगों को तैयार किया। यूहन्ना ने व्यक्तिगत रूप से यीशु को मसीहा के रूप में पहचाना। देखें मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-20; यूहन्ना 1:29.

पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई: तीस वर्ष का होने पर यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई आरम्भ की। तीन से अधिक वर्ष तक वह अपने आने वाले राज्य और हमारे पापों के निमित्त अपनी मृत्यु का आधार रखता रहा। इस दौरान उसने राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया, रोगियों को चंगा किया, और दिखाया कि परमेश्वर कैसा है। देखें मत्ती 4:17; 11:4-6; मरकुस 1:14, 15.

आश्चर्यकर्म: अलौकिक कार्यों को ''आश्चर्यकर्म,'' ''चिह्न'' और ''अद्‌भुत काम'' कहा जाता था। उनसे यह पुष्टि होती थी कि यीशु में ईश्वरीय सामर्थ है। उसने मुर्दों को जिलाया, अन्धों को आंखें दी, दुष्टात्माओं को निकाला और कई अन्य आश्चर्यकर्म किए। यीशु, उसके प्रेरितों या परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए पहली सदी के अन्य लोगों के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म का किसी

ने इनकार नहीं किया। देखें यूहन्ना 20:30, 31; इब्रानियों 2:3, 4.

भविष्यवाणियों (दु:ख भोगने के भविष्य कथनों) का पूरा होना: यीशु आमतौर पर अपनी आने वाली परीक्षाओं और क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में बताता था। उसने विस्तारपूर्वक बताया कि संसार के उद्धार के लिए वह क्या सहने वाला है। देखें मत्ती 16:21–23; 20:18, 19.

प्रभुभोज: अपने पकड़वाए जाने की रात यीशु ने अपने चेलों के साथ भोजन करने के बाद, अखमीरी रोटी और दाख के रस का भोज स्थापित किया, जिसे उसने अपने अनुयायियों को मनाने के लिए कहा (मत्ती 26:26–29; मरकुस 14:22–25; लूका 22:19, 20)। नया नियम संकेत देता है कि उसके अनुयायी इसे लगातार लेते रहे। यह हर रविवार अर्थात सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7) मसीही लोगों के आराधना के लिए इकट्ठा होने पर लिया जाता था। इस आराधना में वे परमेश्वर की महिमा के गीत गाते, प्रार्थना करते, इस भोज में भाग लेते, उसके वचन पर ध्यान करते और भले कामों के लिए चंदा इकट्ठा करते थे।

गतसमनी: यरूशलेम में होने के समय यीशु आम तौर पर बाग में जाता था। क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले वह प्रार्थना करने और संसार के पापों के निमित्त मरने की अपनी योजना को व्यावहारिक रूप देने वहीं गया। गतसमनी में की गई उसकी प्रार्थनाएं अब तक की सबसे प्रभावशाली प्रार्थनाएं हैं। देखें मत्ती 26:36–46; मरकुस 14:32–42; लूका 22:39–46.

यहूदी पेशियां: रोम का यहूदियों को कहना था कि "तुम अपने लोगों का न्याय कर सकते हो, परन्तु मृत्यु का दण्ड उन्हें तभी दे सकते, जब उन्होंने मन्दिर का उल्लंघन किया हो। किसी को जिसने मन्दिर का उल्लंघन न किया हो, मृत्यु का दण्ड देने के लिए हमारी सहमति होना आवश्यक है।" इसलिए यहूदी लोग यीशु को पहले अपने अगुवों हन्ना, कायफ़ा और महासभा के पास उसके विरुद्ध मुकदमा करने के लिए ले गए ताकि वे उसे रोमी अधिकारियों के सामने पेश कर सकें। उन्होंने ज़ोर दिया कि रोम उसके साथ सहमत हो और यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए। हन्ना के लिए देखें यूहन्ना 18:12, 13, 19–23; कायफ़ा के लिए देखें मत्ती 26:57; यूहन्ना 18:14, 24; महासभा के लिए देखें मत्ती 26:59–68; 27:1, 2; मरकुस 14:53–65; 15:1; लूका 22:66–23:1.

रोमी पेशियां: यहूदी लोग यीशु को पिलातुस के पास ले गए, जो रोम का प्रतिनिधि था। पिलातुस उनकी बात से सहमत नहीं हुआ, परन्तु उसे किनारे कर दिया गया और अन्त में उसे उनका आग्रह मानना पड़ा। पिलातुस के सामने उसकी पहली पेशी के लिए देखें लूका 23:1–7; हेरोदेस के लिए लूका 23:8–11; पिलातुस के सामने दूसरी पेशी के लिए देखें लूका 23:11–25.

क्रूसारोहण: किसी अपराधी को क्रूस पर या वृक्ष पर कीलों से ठोंक कर सांस निकलने तक दण्ड देने का यह क्रूर ढंग (गलातियों 3:13) था। कई तो कई-कई दिन तक क्रूस पर लटके रह कर तिल-तिल मरने के लिए रहते थे। रोमी नागरिक को कोड़े मारने या क्रूस देने की मनाही थी। मृत्युदण्ड देने के लिए यहूदी लोग आमतौर पर पथराव का इस्तेमाल करते थे; परन्तु यीशु के विषय में उन्होंने उसे क्रूस देने की मांग की। देखें मत्ती 27:33–54; मरकुस 15:20–39; लूका 23:32–47; यूहन्ना 19:17–30.

पुनरुत्थान: तीन दिन (शुक्रवार, शनिवार और रविवार) के कुछ भाग तक क़ब्र में रहने के बाद यीशु यह दिखाते हुए कि उसके पास मृत्यु के ऊपर अधिकार है, मुर्दों में से जी उठा।

आश्चर्यकर्म से उसका जी उठना यह संकेत था कि वह सचमुच परमेश्वरत्व का तीसरा व्यक्ति है। देखें मत्ती 28; मरकुस 16; लूका 24; यूहन्ना 20; 21.

ऊपर उठाया जाना: जी उठने के चालीस दिन बाद यीशु स्वर्ग पर ऊपर उठा लिया गया। बादलों में से उसके उठाए जाने के समय पिता के पास वापस जाते देखने के लिए प्रेरित वहीं थे। बाइबल बताती है कि समय के अन्त में वह इसी तरह वापस आएगा (मत्ती 26:64)। देखें लूका 24:51; प्रेरितों 1:9-11.

पिन्तेकुस्त का दिन: पिन्तेकुस्त का दिन यीशु के ऊपर उठाए जाने के दस दिन बाद था। यह यहूदियों के लिए विशेष पर्वों में से एक था। इस दिन नई वाचा के आने के चिह्न और प्रेरितों को ईमानदारी से सही-सही परमेश्वर का वचन बोलने और लिखने की अगुआई देने के प्रतीक के रूप में उन पर पवित्र आत्मा बहाया गया था। सुसमाचार सुनाए जाने पर तीन हज़ार लोगों ने मन फिराया और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था। इस दिन वह कलीसिया अस्तित्व में आई, जिसे बनाने की प्रतिज्ञा यीशु ने की थी। पढ़ें प्रेरितों 2 अध्याय।

विश्वास: परमेश्वर की बात पर विश्वास करके और भरोसे व प्रेम से उसकी बात मान कर ही यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। देखें रोमियों 10:17; इब्रानियों 11:1.

मन फिराव: जो हमें पता है कि वह बुरा या पाप है, उसे करना बन्द करके परमेश्वर की बात को मानना ही मन फिराव है। पश्चात्तापी मन का संकल्प इस मसीही युग में परमेश्वर की शिक्षा को आनन्द और समर्पण से मान लेता है। देखें प्रेरितों 17:30; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9, 10.

अंगीकार: यह मौखिक घोषणा भी है कि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और अपने जीवन के द्वारा उसे परमेश्वर का पुत्र हमने माना भी है। देखें मत्ती 10:32; रोमियों 10:10; 1 यूहन्ना 4:15.

बपतिस्मा: बपतिस्मा उसे कहते हैं, जिसमें किसी को पापों की क्षमा के लिए पानी में दफ़नाया जाता है। बपतिस्मा विश्वास व्यक्त करने का और मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को फिर से लागू करना है। यह वह पल है जब यीशु अपनी कलीसिया में डुबकी लेने वाले को मिला लेता है। देखें मत्ती 28:19, 20; प्रेरितों 2:38, 41, 47; रोमियों 6:3, 4.

कलीसिया: इसे मसीह की ''देह'' या उसका ''राज्य'' भी कहा जाता है, जो मसीह की वह आत्मिक देह है, जिसमें उद्धार पाए हुए लोग हैं। उसकी देह परमेश्वर की आराधना करती है, और संसार में उसका कार्य करती है। यीशु जब यहां था तो उसने शारीरिक देह में अपना काम किया, परन्तु अब वह आत्मिक देह अर्थात कलीसिया के द्वारा अपना कार्य करता है। देखें इफिसियों 1:22, 23; 3:21.

पवित्र किया जाना: मसीही व्यक्ति पवित्र किया हुआ अर्थात बपतिस्मा लेने के समय अलग किया हुआ है। वह पृथ्वी पर अपने जीवन के द्वारा इस पवित्र किए जाने में बढ़ता ही रहता है। जैसे-जैसे वह परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता है, वह पवित्रता और शुद्धता में परमेश्वर के जैसा बनता रहता है। वह आराधना करता है, प्रार्थना करता है, चंदा देता है, क्षमा करता है और ज़रूरतमंदों की सेवा करता है। देखें 1 कुरिन्थियों 1:1, 2; प्रेरितों 20:32; इब्रानियों 2:11; 10:14.